1

सुसमाचार के चार वृज़ांत

मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना

हम नये नियम की पहली चार पुस्तकों का अध्ययन करने जा रहे हैं, जिनका नाम उनके लेखकों के नाम पर ही रखा गया है।

मत्ती–एक पूर्व चुंगी लेने वाला और यीशु का एक प्रेरित।

मरकुस–प्रेरितों के काम की पुस्तक वाला यूहन्ना मरकुस, प्रेरिताई के समय का एक जवान प्रचारक।

लूका–डॉ. लूका, जो रोम की यात्रा समेत कई मिशनरी यात्राओं में पौलुस के साथ था।

यूहन्ना–एक पूर्व मछेरा व ''प्रिय'' प्रेरित।

पुस्तक में बाद में हम एक-एक करके मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों को देखेंगे, परन्तु अभी हम उन सब पर संक्षेप में विचार करना चाहते हैं।

एक कहानी के चार विवरण

मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकों को प्राय: ''चार सुसमाचार'' कहा जाता है, परन्तु वास्तव में वे एक ही सुसमाचार के *चार विवरण या वृज़ांत* हैं।[1]

पहली तीन पुस्तकों को प्राय: ''सहदर्शी सुसमाचार'' या सिनोप्टिक गॉस्पल्स कहा जाता है। अंग्रेज़ी शब्द ''synoptic'' ''इकट्ठा'' के साथ ''देखना'' के अर्थ वाले शब्द के लिए एक यूनानी शब्द को मिलाता है। इस तरह ''सिनोप्टिक'' शब्द का अर्थ ''इकट्ठे देखना'' है। पहली तीन पुस्तकों को ''सिनोप्टिक गॉस्पल्स'' या सहदर्शी सुसमाचार कहा जाता है, क्योंकि उनमें यीशु की मिलती-जुलती बातें हैं। ये सभी पुस्तकें सम्भवतया सन् ईस्वी में यरूशलेम के विनाश से पहले लिखी गई थीं।

यूहन्ना की पुस्तक को कभी-कभी ''ऑटोप्टिक [स्व-विचार वाला] गॉस्पल''[2] कहा जाता है, क्योंकि इसमें दूसरी तीन पुस्तकों से अलग विचार मिलता है। यूहन्ना की पुस्तक सम्भवतया पहली तीन पुस्तकों के बाद, 90 ईस्वी के दशक में अर्थात पहली शताब्दी के अन्त में लिखी गई थी।

चार पुस्तकें क्यों?

परमेश्वर ने हमें चार पुस्तकें क्यों दीं, जिनमें एक ही समय तथा एक ही कहानी का

वर्णन है ? पवित्र शास्त्र में, अन्य समयों में एक पुस्तक को एक से अधिक लोगों ने लिखा है (1 शमूएल से 2 राजा की घटनाएं 1 तथा 2 इतिहास में भी मिलती हैं), परन्तु चार पुस्तकों में एक ही कहानी का होना असामान्य बात है।

कलीसिया के प्रारम्भिक इतिहास में लोग अनुमान लगाते थे कि ये चार पुस्तकें क्यों हैं। इस बारे में एक अनुमान यह था कि ''चार मनुष्य का [सांकेतिक] अंक'' है। हम नहीं जानते कि परमेश्वर ने यह विशेष अंक क्यों चुना, परन्तु तथ्य यह है कि बहु-वृत्तांत के लिए उसका प्रेरणा देना कई बातों का संकेत है:

(1) चार वृत्तांतों से पता चलता है कि यीशु की कहानी *कितनी महत्वपूर्ण* है।

(2) चार वृत्तांतों या विवरणों से यीशु की कहानी की *प्रमाणिकता* पर ज़ोर का पता चलता है। मूसा ने कहा था कि ''*दो वा तीन* साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे'' (व्यवस्थाविवरण 19:15ख)। *चार* साक्षी तो उससे भी महत्वपूर्ण हैं।

(3) इन चार वृत्तांतों से यीशु के *बहुआयामी होने* का पता चलता है। एक लेखक शायद उसके साथ कभी न्याय न कर पाता।

> लंदन की नैशनल गैलरी में चार्ल्स प्रथम की एक ही कपड़े पर तीन आकृतियां हैं। एक आकृति में उसका सिर दाहिनी ओर मुड़ा हुआ है; दूसरी में बाईं ओर; और मध्य वाली में उसका पूरा चेहरा दिखाई पड़ता है। इस परिणाम की यही कहानी है। वैन डिक ने उनमें रोमी मूर्तिकार, बरनिनी के लिए रंग भरा, ताकि उनकी सहायता से वह राजा का ऊपर का धड़ बना सके। उन आकृतियों को मिलाकर, बरनिनी ''बोलती'' हुई लगने वाली एक मूर्ति बना का था। उसके लिए एक ही दृश्य काफ़ी नहीं होना था।
>
> सुसमाचार के वृत्तांतों का इन तीन तस्वीरों वाला उद्देश्य ही होगा। हर पुस्तक में हमारे प्रभु के पृथ्वी पर के जीवन को अलग पहलू से दिखाया गया है। इन सब को मिलाकर हमें उसकी सम्पूर्ण तस्वीर मिलती है। वह एक तो राजा था ही, सिद्ध सेवक भी था। वह मनुष्य का पुत्र था, परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वह परमेश्वर का पुत्र भी था।[3]

चार वृत्तांतों की तुलना करना

इन चारों वृत्तांतों का मूल उद्देश्य एक ही है-यीशु को प्रकट करना-परन्तु हर वृत्तांत स्पष्टतया अलग-अलग पृष्ठभूमि वाले श्रोताओं को ध्यान में रखकर थोड़ा-सा अलग दृष्टिकोण से लिखा गया था।[4] नीचे दिए गए चार्ट में चारों वृत्तांतों की तुलना की गई है। ''सुसमाचार के वृत्तांतों की एक संक्षिप्त तुलना'' वाला चार्ट देखें।

मत्ती की पुस्तक मुख्य तौर पर *यहूदियों* के लिए लिखी गई थी। उसने पुराने नियम के एक सौ से अधिक हवाले दिए और यहूदियों में परिचित शब्दों, जैसे ''दाऊद की सन्तान'' (मत्ती 1:1) का इस्तेमाल किया। उसने यीशु को एक राजा के रूप में प्रस्तुत किया, जो अपना राज्य स्थापित करने के लिए आया था; पुस्तक में ''राज्य'' शब्द पचपन

बार आता है। उसने मसीहा के रूप में यीशु पर विशेष ज़ोर दिया और उसकी शिक्षाओं, उसके राज्य तथा उसके अधिकार के बारे में लिखा।[5]

मज़ी के उलट, लगता है कि मरकुस ने गैर यहूदी श्रोताओं के लिए लिखा। उसने अपनी पुस्तक में से उन बातों को, जिनमें अन्यजातियों की दिलचस्पी नहीं थी, निकाल दिया, जैसे वंशावलियां उसने यहूदी परज़्परा का उल्लेख करके उसकी व्याज़्या भी की। बहुत से लेखकों का विचार है कि मरकुस *रोमी* श्रोताओं को ध्यान में रखकर लिख रहा था;[6] उसने कहीं-कहीं कहानियों में लातीनी वाज़्यांशों का इस्तेमाल किया, जबकि दूसरे लेखकों ने यूनानी वाज़्यांशों का। सिकन्द्रिया के ज़्लेमैंट (लगभग 150-215 ईस्वी) के अनुसार, मरकुस से रोम के मसीहियों ने विनती की थी कि जैसा उसने पतरस से सुना था, उसी के अनुसार मसीह के जीवन का वृज़ांत लिखे।[7] मरकुस यीशु के *कामों* तथा उसकी *शिक्षा* पर अधिक ध्यान देता लगता है। उसने यीशु को एक सेवक के रूप में चित्रित किया, जो दूसरों की सहायता करता था (मरकुस 10:45)। उसने यीशु के आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर दिया, ज़्योंकि उन में लोगों के लिए प्रभु के प्रेम तथा सज़्भाल का पता चलता है।

मरकुस की तरह, स्पष्टतया लूका ने भी गैर यहूदी श्रोताओं के लिए ही लिखा, परन्तु जहां मरकुस का वृज़ांत काम में चकीत रखने करने वाले रोमियों के लिए लगता है, वहीं लूका का वृज़ांत बुद्धिजीवियों अर्थात छात्रों के लिए लिखा गया लगता है। बहुत से लोगों का निष्कर्ष है कि लूका के ध्यान में *यूनानी* श्रोता थे। उसके वृज़ांत में यीशु को "मनुष्य का पुत्र" (लूका 19:10) के रूप में दिखाया गया है और उसके सिद्ध मनुष्य होने पर विशेष ज़ोर दिया गया है।

यूहन्ना का वृज़ांत सज़्भवतया अन्य तीनों के बाद लिखा गया और उसका अपना ज़ोर है। यीशु के बारे में अलग-अलग भ्रान्तिपूर्ण विचार पैदा हो गए, जिससे *विश्वासियों* की उलझन बढ़ गई थी। यूहन्ना ने यीशु को "परमेश्वर का पुत्र" (यूहन्ना 20:31) के रूप में प्रस्तुत करके उसके ईश्वरीय होने पर ज़ोर दिया।

हम कह सकते हैं कि मज़ी आज बाइबल के छात्रों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है और मरकुस सामान्य व्यज़्ति के लिए, जिसमें व्यापारी लोग शामिल हैं, जबकि लूका विशेष तौर पर विद्वानों, विचारकों, आदर्शवादियों तथा सच्चाई के खोजने वालों का ध्यान खींचता है। दूसरी ओर, यूहन्ना को "विश्वव्यापी सुसमाचार" कहा गया है, जो हर युग के हर व्यज़्ति को आकर्षित करता है।

इसके अलावा, हम कह सकते हैं कि मज़ी का उद्देश्य यीशु को *प्रतिज्ञा किया हुआ* उद्धारकर्ज़ा; मरकुस का, *शज़्तिशाली* उद्धारकर्ज़ा; लूका का, *सिद्ध* उद्धारकर्ज़ा; और यूहन्ना का उद्देश्य *व्यज़्तिगत* उद्धारकर्ज़ा के रूप में दिखाना है। परन्तु इन भिन्नताओं के बावजूद हमें इस तथ्य को नज़रअंदाज नहीं करना चाहिए कि हर पुस्तक का अन्तिम उद्देश्य एक ही है: और वह है *सब लोगों को उद्धार के यीशु के ज्ञान तक लाना!*

चार वृज़ांतों में ज़्या बताया गया है

सुसमाचार के चारों वृज़ांतों के लिए कई बार "जीवनी" शज़्द का इस्तेमाल किया

जाता है, परन्तु वास्तव में, चारों पुस्तकें जीवनियां नहीं हैं। बल्कि वे ''उपदेशात्मक वृज़ांत'' हैं। (''उपदेशात्मक'' के लिए अंग्रेज़ी शज़्द didactic है, जो यूनानी शज़्द से निकला है और जिसका मूल अर्थ ''शिक्षा'' है।) नीचे कुछ कारण दिए गए हैं, जिनसे पता चलता है कि हम इन वृज़ांतों को जीवनियां ज़्यों नहीं मानते:

(1) इनमें यीशु की जीवनी बताने का कोई प्रयास नहीं किया गया। पहले तीस वर्ष लगभग खाली हैं, जबकि चारों वृज़ांतों का चौथे से अधिक भाग केवल एक ही घटना (यीशु की मृत्यु) पर केन्द्रित है। यीशु को बारह से तीस वर्ष की आयु के बीच की किसी भी घटना का कोई रिकॉर्ड हमारे पास नहीं है। यदि कोई मेरे जीवन की कहानी लिख रहा हो और वह बारह से तीस वर्ष के समय को यूं ही छोड़ दे, तो उससे इस बात का कोई संकेत नहीं मिलेगा कि अपनी पत्नी से मेरी पहली मुलाकात कैसे हुई थी या मैंने प्रचार करने का निर्णय ज़्यों लिया और न ही मेरे विवाह के बारे में, मेरे काम के आरज़्ज़ के बारे में या मेरे बच्चों के जन्म के बारे में पता चलेगा। यह वास्तव में एक बड़ी ही अजीब जीवनी होगी!

(2) यद्यपि इन वृज़ांतों में मूलत: क्रम का ढंग जैसे जन्म, बचपन, बपतिस्मा, सेवकाई, मृत्यु तथा पुनरुत्थान, अपनाया गया है, परन्तु लेखकों के लिए कभी भी कालक्रम महत्वपूर्ण नहीं था। उन्होंने घटनाओं को निश्चित सच्चाइयों पर ज़ोर देने के लिए इकट्ठे किया।

(3) किसी भी लेखक ने यीशु की शारीरिक संरचना का वर्णन नहीं किया। ज़्या कोई जीवनी लेखक ऐसी गलती कर सकता है?

ज़्योंकि चारों पुस्तकें उपदेशात्मक शिक्षा हैं, जिसमें कालक्रम पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया, इसलिए चारों वृज़ांतों को एक वृज़ांत (''सामंजस्य'') में इकट्ठा करना आसान नहीं है। परन्तु जैसा पहले कहा गया है कि यह प्रयास महत्वपूर्ण हो सकता है। ''सुसमाचार के वृज़ांतों में दी गई सामग्री'' चार्ट देखें, इससे आपको चारों पुस्तकों के यीशु की कहानी में योगदान का विचार मिल जाएगा।

ध्यान दें कि सुसमाचार के समानान्तर वृज़ांतों में मूलत: वही सामग्री है, जबकि यूहन्ना के वृज़ांत में मुज़्तय रूप से अतिरिज़्त सामग्री दी गई है। एक ही समय के बारे में बताने के बावजूद, यूहन्ना ने मज़ी, मरकुस और लूका से अलग जानकारी दी है। यूहन्ना के वृज़ांत में यीशु के जन्म, यीशु के बपतिस्मे तथा परीक्षा, पहाड़ी उपदेश, सभी दृष्टांतों, रूपांतरण, प्रभु भोज की स्थापना और गतसमनी के संताप को छोड़ दिया गया है, जबकि सुसमाचार की सहदर्शी पुस्तकों में इन सभी का वर्णन है।

यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने तथा पुनरुत्थान के अलावा चारों वृज़ांतों में केवल कुछ ही घटनाओं का उल्लेख है। यदि किसी घटना को चारों पुस्तकें बताती हैं तो इसका यह अर्थ है कि उस घटना का विशेष महत्व है और उस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

चारों वृज़ातों में भिन्नताएं

सुसमाचार की एकता बनाने वाले व्यज़्ति को शीघ्र ही पता चल जाता है कि एक ही

घटना के वृज़ांतों में विभिन्नताएं पाई जाती हैं। इन विभिन्नताओं की व्याज़्या कैसे की जा सकती है ?[8]

अधिकतर मामलों में, एक वृज़ांत दूसरे से अतिरिज़्त जानकारी देता है। बैतनिय्याह में यीशु के अभिषेक की कहानी पर विचार करें। मज़ी के वृज़ांत के अनुसार (मज़ी 26:6-13), यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था, जब एक अनाम स्त्री ने बहुमूल्य इत्र लाकर यीशु का अभिषेक किया, जिस कारण यीशु के चेले नाराज हो गए थे। मरकुस का वृज़ांत (मरकुस 14:3-9) उससे कुछ मिलता-जुलता है, परन्तु उसमें कुछ अतिरिज़्त विवरण जोड़ा गया है कि वह इत्र शुद्ध जटामांसी का था, उस स्त्री ने पात्र तोड़ा और उस इत्र का दाम तीन सौ दीनार था।[9] यूहन्ना के वृज़ांत में (यूहन्ना 12:1-8) अन्य विवरण दिए गए हैं, जिनमें यह भी जानकारी शामिल है: यीशु अपने सज़्मान में तैयार किए एक भोज में भाग लेने गया था; मारथा सेवा कर रही थी; लाज़र भी यीशु के साथ मेहमान था; यीशु का अभिषेक करने वाली स्त्री मारथा की बहन, मरियम थी; और आलोचना करने वाला व्यज़्ति यहूदा इस्करयोती था। स्पष्टतया इन विवरणों में कोई विरोधाभास नहीं, बल्कि अतिरिज़्त जानकारी ही है।

यह ध्यान दिया गया है कि जब गवाह अतिरिज़्त विवरण देते हैं, तो इसका अर्थ उनकी गवाही को नकारना नहीं, बल्कि उनकी यथार्थता पर मोहर लगाना होता है।

> डॉ. [हैनरी] वैन डाइक ने कहा है, ''यदि किसी घटना का विवरण देने के लिए चार गवाहों को जज के सामने बुलाया जाए, और उनमें से हर गवाह एक जैसे शज़्दों में वही कहानी बताए, तो जज सज़्भवतया यह निष्कर्ष निकालेगा कि यह घटना तो बेशक एक ही है, परन्तु इस में कोई संदेह नहीं कि उन सब ने एक ही कहानी बताने की सहमति की हुई है। परन्तु यदि हर व्यज़्ति वैसे ही बताए जैसे उसने देखा था, तो प्रमाण विश्वसनीय हो जाएगा। सुसमाचार की चारों पुस्तकें पढ़ने पर हमें ऐसा ही नहीं मिलता ? चार लोग एक ही कहानी को अपने-अपने ढंग से बताते हैं।''[10]

परन्तु कई मामलों में आवश्यक नहीं होता कि विवरण अतिरिज़्त जानकारी देने वाले हों; इसके बजाय उनमें अन्तर होता है। हो सकता है कि घटनाओं का क्रम एक जैसा न हो, अलग-अलग अधिकारियों का उल्लेख किया गया हो या संज़्या भिन्न हो। उदाहरण के लिए, यरीहो के निकट एक या अधिक अन्धों को यीशु द्वारा चंगाई देने की कहानी पर ध्यान दें। मज़ी के वृज़ांत में (मज़ी 20:29-34), यीशु यरीहो से *निकल* रहा था और *दो* लोगों को चंगा किया गया था। लूका के वृज़ांत में (लूका 18:35-43), यीशु यरीहो के *निकट* पहुंचा था और इसमें *एक* ही अन्धे को चंगाई मिलने की बात है।[11] इस प्रकार के अन्तरों को हम ज़्या कह सकते हैं ? कुछ सज़्भावनाएं ये हैं:

(1) विवरणों में कुछ भिन्नताएं लेखकों के किसी बात पर ज़ोर देने के कारण हैं। ऊपर दिए उदाहरण में लूका ने केवल एक अन्धे पर ज़ोर दिया, परन्तु इससे यह सज़्भावना

खत्म नहीं हो जाती कि वहां दो अन्धे थे, जिन्हें चंगाई मिली थी।

(2) विवरणों में भिन्नताएं इसलिए हैं, ज़्योंकि लेखक एक ही घटना को नहीं, बल्कि मिलती-जुलती कई घटनाओं को लिख रहे थे। एफ़. लेगर्ड स्मिथ की टिप्पणी है:

> कई बार यह निर्णय कर पाना कठिन हो जाता है कि वही दो घटनाएं वास्तव में दो बार घटीं या एक ही घटना थी, जिसे दूसरे लेखक ने किसी अलग संदर्भ में लिखा। मन्दिर का शुद्ध किया जाना और यरूशलेम पर विलाप इस समस्या के उदाहरण हैं।[12]

(3) घटना के सभी तथ्य न होने पर हमें इनमें विरोधाभास का संदेश हो सकता है। ऊपर दिए गए उदाहरण के सज़्बन्ध में, सुझाव दिया जाता है कि यरीहो की पुरानी जगह और यरीहो का नया नगर था। इसलिए यह घटना यीशु के एक नगर से *निकलने* और दूसरे में *प्रवेश* करने की हो सकती है। ऐसे विरोधाभासों का दावा करने वाले लोग ज्ञान की कमी को स्वीकार करते हैं।

(4) विरोधाभास इसलिए हो सकते हैं, ज़्योंकि हमें मूल शास्त्र की किसी बात की समझ नहीं होती। वर्षों तक, नास्तिक लोगों का दावा था कि एक भुगतान के सज़्बन्ध में पुराने नियम में एक विरोधाभास है: एक वृज़ांत में किसी निश्चित भुगतान की बात कही गई है जबकि दूसरे में अलग राशि दिखाई गई है। बाद में, पुरातत्वविदों ने पाया है कि उस समय बहुमूल्य धातुओं का मूल्य निर्धारण करने के दो ढंग थे; सज़्भवतया एक लेखक ने एक ही ढंग की बात की, जबकि दूसरे ने दूसरे ढंग की। समय-समय पर पुरातत्व विज्ञान पवित्र शास्त्र पर नई रोशनी डालता रहता है।

यीशु की कहानी में आगे बढ़ते हुए, मैं इन वृज़ांतों के बीच अधिक प्रचारित ''अन्तरों'' में से कुछ पर ध्यान दूंगा और उन विभिन्नताओं में सामंजस्य बनाने के सुझाव दूंगा।

चार वृज़ांतों में पाई जाने वाली समानताएं

ज़्योंकि मेरा विश्वास है कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया है (2 तीमुथियुस 3:16, 17), इसलिए सुसमाचार के वृज़ांतों में पाई जाने वाली *विभिन्नताओं में* मेरी विशेष दिलचस्पी है। परन्तु बहुत से विद्वानों की दिलचस्पी सुसमाचार के वृज़ांतों विशेषकर मज़ी, मरकुस और लूका में *समानताओं* के बारे में है। ये लोग ''सिनोप्टिक प्रॉज़्लम'' की बात करके लज़्बे समय तक बहस करते हैं कि ये पुस्तकें समान ज़्यों हैं: कई लेखक कभी-कभी एक जैसी या मिलती-जुलती भाषा का इस्तेमाल ज़्यों करते हैं। वे ऐसे प्रश्नों से जूझते हैं: ''ज़्या एक लेखक ने दूसरे लेखक की नकल की?''; ''ज़्या लेखकों ने एक ही सामान्य स्रोत का इस्तेमाल किया?''

मैं मानता हूं कि इन विद्वानों की उलझन के लिए मेरी कोई सहानुभूति नहीं है। एक ही लेखक अर्थात पवित्र आत्मा की प्रेरणा से होने के कारण इन पुस्तकों को एक जैसा होना स्वाभाविक ही था। पुराने नियम के समयों की तरह, ''भज़्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा

उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे'' (2 पतरस 1:21)। यदि कोई परमेश्वर की प्रेरणा में विश्वास रखता है,[13] तो चारों पुस्तकों के एक ही लेखक के होने की बात तथाकथित ''सिनोप्टिक प्रॉज़्लम'' हमेशा के लिए हल हो जाती है।

चारों वृज़ांतों पर भरोसा किया जा सकता है!

यीशु के जीवन के मज़ी के, मरकुस के, लूका के, और यूहन्ना के वृज़ांतों को कलीसिया के प्रारज़्भिक दिनों से ही नये नियम की प्रेरणा का भाग माना जाता रहा है और *केवल* इन्हीं चार वृज़ांतों को शामिल किया गया है।

> कुछ अपूर्ण कथनों के अलावा [नये नियम की दूसरी पुस्तकों में], [यीशु के] जीवन के प्रामाणिक रिकॉर्ड मज़ी, मरकुस, लूका और यूहन्ना की सुसमाचार की चारों पुस्तकों में ही मिलते हैं, जिन्हें मसीही कलीसिया द्वारा अपने इतिहास के प्रारज़्भिक काल से ही धार्मिक पुस्तकें माना जाता है। यद्यपि इन प्रसिद्ध चार पुस्तकों में न पाए जाने वाले उसके जीवन से सज़्बन्धित तथ्यों का दावा करने वाली सुसमाचार की कई और पुस्तकें भी थीं, जिन्हें अपोक्रिफल गॉस्पल्स (अर्थात अप्रामाणिक सुसमाचार)[14] कहा जाता है, सामान्यतया बाद के समय और उनकी विश्वसनीयता पर संदेह किया जाता है। उनमें कुछ ऐसी जानकारी है, जो सुसमाचार की इन पुस्तकों की नकल नहीं है और जिनका अधिकांश भाग स्पष्टतया काल्पनिक तथा दंतकथा है। इसके अलावा, वे अपनी भाषा से ये भेद खोलती हैं कि उन्हें किसी विशेष सज़्प्रदाय के विचारों को बढ़ावा देने के लिए लिखा गया था ...।[15]

मसीह के जीवन का यह अध्ययन आरज़्भ करते हुए हमारे लिए महसूस करना आवश्यक है कि हम इन चारों वृज़ांतों पर *निर्भर* हो सकते हैं।

> साइमन ग्रीनलीफ महान अमेरिकी वकीलों में से एक हुआ है, जिसने अंग्रेज़ी भाषा में मिलने वाली लॉ ऑफ़ एविडेंस में एक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी है। *ए ट्रिटाइज़ ऑन द लॉ ऑफ़ एविडेंस* नामक उसकी पुस्तक लगभग एक सौ वर्ष तक इस विषय की सबसे श्रेष्ठ पुस्तक मानी जाती रही। इसके सोलह संस्करण बने। अपनी मृत्यु से केवल सात वर्ष पूर्व, त्रेसठ वर्ष की आयु में इस परिपज़्व हो चुके वकील, साइमन ग्रीनलीफ ने एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें उसने यीशु मसीह के चार सुसमाचार प्रचारकों की गवाही की समीक्षा की। उसने सज़्य जगत में न्यायालयों में प्रयुज़्त होने वाले प्रमाण के नियमों का ही इस्तेमाल किया। उसने कहा: ''हमारा पेशा हमें झूठ के गोरखधंधे को उजागर करने, इसके झूठ का पता लगाने, इसकी परतों को खोलने, और इसके कुतर्कों को सामने लाने, सज़्ती से अलग-अलग गवाहों के ज़्यानों की तुलना करने, सच और झूठ का पता लगाने की ओर ले जाता है।'' इस पुस्तक में, जिसके 543 पृष्ठ हैं, साइमन ग्रीनलीफ इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि सुसमाचार की पुस्तकें पूरी तरह से विश्वसनीय हैं और चारों

एवेंजलिस्टों (सुसमाचार प्रचारकों) ने यीशु मसीह के बारे में झूठ नहीं बोला हो सकता, ज़्योंकि उनकी गवाही सच्चाई की घोषणा करती है।[16]

मज़ी, मरकुस, लूका और यूहन्ना की पुस्तकें बिल्कुल वही हैं, जो होने का उनमें दावा किया गया है अर्थात संसार के सबसे महान व्यज़्ति के सच्चे वृज़ांत! आप इन पुस्तकों के भरोसे अपना जीवन और अपना अनन्तकाल छोड़ सकते हैं। पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा है: ''यह बात सच और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया'' (1 तीमुथियुस 1:15क)।

टिप्पणियां

[1]दूसरी और तीसरी शताज़्दियों से ही नये नियम की पहली चार पुस्तकों के लिए ''सुसमाचार'' (अंग्रेज़ी में बहुवचन Gospels-अनुवादक) शज़्द का इस्तेमाल किया जाता है। मुझे ''सुसमाचार के वृज़ांत'' ही ठीक लगता है, परन्तु तकनीकी शज़्द के रूप में ''Gospels'' से भी मुझे कोई आपज़ि नहीं है। [2]''ऑटोप्टिक'' से प्रत्यक्षदर्शी का विचार भी मिल सकता है। [3]हैनरेटा सी. मियर्स, *व्हट द बाइबल इज़ ऑल अबाउट* (गलैंडेल, कैलिफोर्निया: गॉस्पल लाइट पज़्लिकेशन्स, 1966), 348. [4]किसी अलग जगह सुनाने के लिए वृज़ांत तैयार करने के एक उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस के मन परिवर्तन के तीन वृज़ांतों को देखें: प्रेरितों के काम 9 अध्याय का वृज़ांत लूका के पाठकों के लिए लिखा गया था; प्रेरितों के काम 22 अध्याय का वृज़ांत यरूशलेम में यहूदियों के सामने पौलुस की सफाई का भाग था; प्रेरितों 26 अध्याय में यह कैसरिया में पौलुस के उपदेश का भाग था। जो मुज़्यत: राजा अग्रिप्पा के लिए था। साइमन किस्टमेकर ने इन में से अन्तिम दो वृज़ांतों पर यह टिप्पणी की है: ''एक ही घटना [अपने मन परिवर्तन] से, [पौलुस ने] बुद्धिमज़ा से अलग-अलग शज़्दों का चुनाव करके हर समूह के सुसमाचार लाने के लिए अपने प्रयासों के अलग-अलग पहलुओं पर ज़ोर दिया ...'' (साइमन किस्टमेकर, *न्यू टैस्टामेंट कमैन्ट्री: एज़्सपोज़िशन ऑफ़ द एज़्ट्स ऑफ़ द अपोस्टल्स* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1990], 899)। [5]इस पुस्तक में आगे में प्रत्येक पुस्तक की रूपरेखा में इन चारों वृज़ांतों की अतिरिज़्त जानकारी दी जाएगी। [6]''मरकुस की पुस्तक'' पाठ देखें। [7]जॉन फ्रैंकलिन कार्टर, *ए लेमैन'स हार्मनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 25. [8]प्रेरितों के काम की पुस्तक में मैंने पहले ध्यान दिलाया था कि लूका ने शाऊल के मन परिवर्तन के तीन वृज़ांत दिए हैं (प्रेरितों 9; 22; 26)। जॉन स्टॉट ने इस पर टिप्पणी की है: ''एक ही लेखक (लूका) हमें यह समझाने के लिए कि किस प्रकार तीन सहदर्शी सुसमाचार प्रचारकों (मज़ी, मरकुस और लूका) ने अपनी एक जैसी कहानी को अलग-अलग ढंग से बता पाएं, हमारा अध्ययन सहायक है'' (जॉन आर. डज़्ल्यू स्टॉट, *द मैसिज ऑफ़ ऐज़्ट्स: द स्पिरिट, द चर्च एण्ड द वर्ल्ड,* द बाइबल स्पीज़्स टुडे सीरीज़, सं. जॉन आर. डज़्ल्यू स्टॉट [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर वर्सिटी प्रैस, 1990], 380)। [9]एक दीनार साधारण मजदूर की एक दिन की मज़दूरी के बराबर था। [10]मीयर्स, 345.

[11]मरकुस के वृज़ांत में (मरकुस 10:46-52), केवल एक अन्धे को चंगाई दी गई (बर्तिमाई)। [12]एफ़. लेगर्ड स्मिथ, *द नैरेटड बाइबल इन क्रोनोलॉजिकल ऑर्डर* (यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पज़्लिशर्स, 1984), 1351. [13]इस पूरी शृंखला में हम यह मानकर चलेंगे कि पवित्र आत्मा ने मज़ी, मरकुस, लूका और यूहन्ना को प्रेरणा दी और उन्होंने लिखा। कई बार इसे स्पष्ट तौर पर कहा जाएगा और कई बार नहीं। जब भी यह टिप्पणी की गई हो कि सुसमाचार के लेखकों में से एक ने यह या वह ''कहा,'' तो यह समझ लिया जाए

कि उसने यह *परमेश्वर की प्रेरणा से* कहा। [14]''अपोक्रिफा'' का अर्थ है ''छुपा हुआ।'' आज के इस्तेमाल के रूप में, इसका अर्थ ''लेखक या प्रामाणिकता पर संदेह'' है। [15]मैरिल सी. टैनी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1961), 131। [16]जॉन फिलिप्स, *एक्सप्लोरिंग द स्क्रिप्चर्स* (लंदन: विज़्ट्री प्रैस, 1965), 189-90.

सुसमाचार के लेखों के विशेष सम्बन्ध

जबकि हमारे लिए यह जानना न तो आवश्यक है और न ही सम्भव कि पवित्र आत्मा ने सुसमाचार के वृत्तांतों के लेखकों को जानकारी कैसे उपलब्ध करवाई, फिर भी चारों लेखकों के आपस के सम्बन्ध और दूसरों के साथ उनके सम्बन्धों के बारे में जानना विद्वानों और आलोचकों को अच्छा लगता है।

एक प्रेरित होने के कारण मत्ती का मसीह के साथ सीधा सम्बन्ध था (मत्ती 9:9; 10:3; मरकुस 2:14)। उसने जितनी भी बातें लिखीं, उनमें से अधिकतर उसने अपनी आंखों से देखी थीं।

सामान्यतया यह विश्वास किया जाता है कि सुसमाचार के मरकुस के वृत्तांत में पतरस से ली गई जानकारी है।[1] हम जानते हैं कि मरकुस और पतरस सहकर्मी थे (1 पतरस 5:13)। मरकुस ने पौलुस के साथ भी काम किया था (प्रेरितों 13:5; कुलुस्सियों 4:10), और हो सकता है कि यीशु के साथ उसका निजी सम्पर्क सीमित *हो।*[2]

लूका ने यह संकेत दिया कि उसकी पुस्तक खोज का परिणाम है (लूका 1:1-4),[3] जो यह अर्थ देता है कि वह निजी तौर पर यीशु को नहीं जानता था। विद्वानों के अनुमान हैं कि उसने प्रत्यक्षदर्शियों से जानकारी प्राप्त की थी। पौलुस के सहकर्मी और घनिष्ठ मित्र होने के कारण (कुलुस्सियों 4:14; 2 तीमुथियुस 4:11[4]), लूका को मसीह के जीवन के बारे में इस प्रेरित के निजी प्रकाशन मिल सके (1 कुरिन्थियों 11:23)। लूका ने भी परमेश्वर की प्रेरणा से दिए सुसमाचार के अन्य मौखिक वृत्तांतों का इस्तेमाल किया हो सकता है।[5] परमेश्वर की प्रेरणा से लोग किसी भी वृत्तांत के लिखे जाने से पहले कम से कम तीस वर्ष से यीशु का प्रचार कर रहे थे। यीशु के जीवन की मूल कहानी कलीसिया के लिए जानी पहचानी थी।

यूहन्ना और मत्ती ने यीशु के प्रेरितों के रूप में इकट्ठे काम किया था (मत्ती 10:2; यूहन्ना 13:23; 19:26; 20:2; लूका 5:1-11 भी देखें)। मरकुस और लूका एक ही समय में रोम में थे (कुलुस्सियों 4:10, 14)। क्योंकि यरूशलेम की कलीसिया को मरकुस के घर में इकट्ठी होती थी (प्रेरितों 12:12), इसलिए मरकुस लगभग सभी प्रेरितों को जानता होगा, जिनमें मत्ती और यूहन्ना भी थे। क्योंकि लूका यरूशलेम में समय बिताता था (प्रेरितों 21:15; 27:1), वह उन प्रेरितों से अच्छी तरह परिचित होगा, जो यरूशलेम को अपने कार्यों के लिए मुख्यालय के रूप में इस्तेमाल करते थे, जिनमें मत्ती और यूहन्ना भी होंगे। क्योंकि यूहन्ना ने मत्ती, मरकुस और लूका के कई दशकों बाद अपना वृत्तांत लिखा, कोई संदेह नहीं कि वह इन वृत्तांतों से परिचित था। लगता है कि उसने जानबूझकर अतिरिक्त

सामग्री लिखना चुना।

मिलती-जुलती सामग्री, शैली या शब्दों के चयन से हैरान होने की आवश्यकता नहीं है। सभी लेखकों का बहुत *महत्वपूर्ण* सम्बन्ध था: यीशु की कहानी बताने के लिए उन सब को पवित्र आत्मा से प्रेरणा मिली थी।

टिप्पणियां

[1]कलीसिया के प्रारम्भिक (परमेश्वर की प्रेरणा रहित) लेखकों का दावा था कि बात ऐसी ही थी। ''मरकुस की पुस्तक'' पाठ देखें। [2]बहुत से लोगों का विश्वास है कि मरकुस 14:51, 52 वाला जवान स्वयं मरकुस ही था। [3]पवित्र आत्मा ने लूका को खोज करने में अगुआई दी होगी। निश्चय ही खोज से प्राप्त सामग्री का इस्तेमाल करने में उसने लूका की अगुआई की। [4]प्रेरितों के काम में (उदाहरण के लिए प्रेरितों 16:10), ''हम'' वाले पदों में लूका के पौलुस से निकट सम्बन्ध होने का संकेत मिलता है। [5]पौलुस और अन्य प्रेरितों ने लोगों पर उन्हें आश्चर्यकर्म करने के दान देने के लिए हाथ रखे थे (प्रेरितों 8:17)। उनमें से एक दान वह अलौकिक ज्ञान था (1 कुरिन्थियों 12:8) जो दूसरों को बांटा जाना था।

सुसमाचार के वृज़ांतों की एक संक्षिप्त तुलना						
पुस्तक	**मुज़्यता ... के लिए लिखी गई**	**यीशु को ... के रूप में प्रस्तुत करता है**	**पुस्तक में विशेष ज़ोर**	**आज ... के लिए विशेष बिनती**	**अन्तिम उद्देश्य**	
मज़ी	यहूदियों	राजा	यीशु मसीहा के रूप में: उसकी शिक्षा, उसका राज्य, उसका अधिकार	बाइबल छात्र	**प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ज़ा**	लोगों को उद्धारकर्ज़ा के ज्ञान तक लाना
मरकुस	रोमियों	सेवक	यीशु की गतिविधि, लोगों की *सहायता* के लिए आश्चर्यकर्म	आम आदमी, व्यापारी	**सामर्थी उद्धारकज़ा**	
लूका	यूनानियों	मनुष्य का पुत्र	यीशु की सिद्ध मनुष्यता	विद्वान, विचारक, आदर्शवादी, सच्चाई के खोजी	**सिद्ध उद्धारकज़ा**	
यूहन्ना	विश्वासियों	परमेश्वर का पुत्र	यीशु की *ईश्वरीयता*	सब लोग	**निजी उद्धारकज़ा**	

सुसमाचार के वृज़ांतों में इस्तेमाल सामग्री

मसीह के जीवन की मूल रूपरेखा	सहदर्शी सुसमाचार			यूहन्ना
	मत्ती	मरकुस	लूका	
I. जन्म और शैशवकाल का समय क. पूर्वास्तित्व				●
ख. वंशावली, जन्म, व शैशवकाल	●		●	
II. तैयारी का काल क. बचपन			●	
ख. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई	●	●	●	●
ग. बपतिस्मा और परीक्षा	●	●	●	
III. गुमनामी का काल क. गलील की प्रारम्भिक सेवकाई ख. यहूदिया की प्रारम्भिक सेवकाई				●
IV. गलील की महान सेवकाई क. पांच उप-काल	14 से अधिक अध्याय	लगभग 9 अध्याय	लगभग 5 अध्याय	1 अध्याय से कुछ अधिक
ख. समय के इस काल के दौरान यरूशलेम में जाना				●
V. पलिश्तीन के सब भागों में सेवकाइ समाप्त करने का काल क. बाद की यहूदिया की सेवकाई			●	यरूशलेम
ख. पिरिया की सेवकाई	?	?	●	का हवाला दिया गया
ग. यरूशलेम का सफ़र	●	●	●	का हवाला दिया गया
VI. अन्तिम सप्ताह का काल क्रूसारोहण समेत	7 अध्याय	5 अध्याय	4 1/2 अध्याय	8 अध्याय
VII. चालीस दिन का काल पुनरुत्थान से स्वार्गरोहण तक	●	●	●	●